अध्याय 30

निवासस्थान के लिए निर्देश (भाग 4)

अध्याय 30, यहोवा का मिलापवाले तम्बू के विभिन्न भाग बनाने के निर्देश के साथ ही समाप्त होता है। याजक के वस्त्र, पवित्रीकरण, और कार्यों का विश्लेषण करने के पश्चात (अध्याय 28; 29), उसने धूप जलाने की वेदी बनाने का निर्देश दिया (30:1-10)। आगे, उसने यह आदेश दिया कि मिलापवाले तम्बू की "सेवा" के लिए आवश्यक धन की पूर्ति के लिए लोगों से कर वसूला जाना चाहिए (30:11-16)। जो अंतिम वस्तु बनाने का निर्देश दिया गया वह पीतल की हौदी है (30:17-21)। तब उसने अभिषेक के लिए प्रयोग किए जाने वाला "पवित्र का अभिषेक तेल" (30:22-33) और धूप जलाने की वेदी के लिए सुगन्धित मसाले बनाने का निर्देश दिया (30:34-38)।

धूप जलाने की वेदी (30:1-10)

[1]"फिर धूप जलाने के लिये बबूल की लकड़ी की वेदी बनाना। [2]उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हो, वह चौकोर हो, और उसकी ऊँचाई दो हाथ की हो, और उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएँ। [3]और वेदी के ऊपरवाले पल्ले और चारों ओर के बाजुओं और सींगों को चोखे सोने से मढ़ना, और इसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाना। [4]और इसकी बाड़ के नीचे इसके आमने-सामने के दोनों पल्लों पर सोने के दो दो कड़े बनाकर इसके दोनों ओर लगाना, वे इसके उठाने के डण्डों के खानों का काम देंगे। [5]डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनाकर उनको सोने से मढ़ना। [6]और तू उसको उस परदे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने है, अर्थात् प्रायश्चित्त वाले ढकने के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर है, वहीं मैं तुझ से मिला करूँगा। [7]और उसी वेदी पर हारून सुगन्धित धूप जलाया करे; प्रतिदिन भोर को जब वह दीपक को ठीक करे तब वह धूप जलाए, [8]और गोधूलि के समय जब हारून दीपकों को जलाए तब धूप जलाया करे, यह धूप यहोवा के सामने तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में नित्य जलाया जाए। [9]उस वेदी पर तुम

किसी अन्य प्रकार का धूप न जलाना, और न उस पर होमबलि और न अन्नबलि चढ़ाना; और न उस पर अर्घ देना। [10]हारून वर्ष में एक बार इसके सींगों पर प्रायश्चित्त करे; और तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में वर्ष में एक बार प्रायश्चित्त के पापबलि के लहू से इस पर प्रायश्चित्त किया जाए; यह यहोवा के लिये परमपवित्र है।"

यहोवा ने धूप जलाने की वेदी का निर्माण करने का निर्देशन तब तक नहीं दिया जब तक उसने मिलापवाले तम्बू बनाने के बारे में विस्तृत विश्लेषण देना समाप्त नहीं किया। मिलापवाले तम्बू की साज सज्जा के बारे में अन्य निर्देशन उसने पहले ही अध्याय 25 में दे दिया था। इस पाठ से इस बात का कोई कारण नहीं दिखाई देता है कि क्यों धूप जलाने की वेदी को दूसरे चीजों से अलग रखा गया। संभवतः इस वेदी से संबंधित सूचनाएं अध्याय 30 में इसलिए दिया गया था क्योंकि इसमें याजक की भूमिका से संबंधित सूचनाएं थीं जो अध्याय 28 और 29 का विषय था। जिस तरह एक याजक को हर दिन दो बलिदान चढ़ाने थे (29:38, 39), उसी तरह उसको दिन में दो बार बत्ती को छांटना था और बलिदान चढ़ाना था (30:7, 8) और धूप की वेदी के सींगों पर वर्ष में एक बार प्रायश्चित्त करना था (30:10)।

आयतें 1-3. वेदी के लिए ये निर्देश असमंजस में डालने वाली है, लेकिन इसका विश्लेषण समझना आसान है। इसको **बबूल की लकड़ी** से बनाया जाना था जिसको **सोने** से मढ़ा जाना था, ताकि वह अति पवित्र स्थान में रखे जाने के योग्य हो। **उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हो, वह चौकोर हो, और उसकी ऊँचाई दो हाथ की हो।** वेदी में दो **सींग** अर्थात् इसके चारों कोनों में सींग जैसे दिखने वाला आकार होना चाहिए था। अंत में, उसको चोखे **सोने** से मढ़ा जाना चाहिए था।

आयतें 4, 5. तम्बू के अन्य सामान (फर्नीचर) के समान, यह भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में आसान हो। इसलिए, इसमें **सोने के कड़े** और **डंडे** होने चाहिए, जिसको **बबूल की लकड़ी** से बनाया जाना था और **सोने** से मढ़ा जाना था। ये डंडे वेदी को छुए बिना एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में सहायता करते थे।

आयत 6. परमेश्वर ने कहा कि धूप जलाने की वेदी को परदे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने है और प्रायश्चित्त वाले ढकने के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर है, रखना। टीकाकार इससे सहमत हैं कि यह अनुच्छेद पवित्र स्थान की स्थिति स्पष्ट करती है, यह ठीक परदे के आगे रखा था जो पवित्र स्थान को महापवित्र स्थान से अलग करती थी।[1] मिलापवाले तम्बू बनाने के समय मूसा ने "बीच के परदे के सामने सोने की वेदी को रखा" (40:26)। यह विचार कि धूप जलाने की वेदी, महा पवित्र स्थान के बजाए पवित्र स्थान में रखा था, से यह बात स्पष्ट होता है कि याजकों को वेदी पर धूप हर दिन जलाना पड़ता था (30:7, 8) परंतु उन्हें महापवित्र स्थान में वर्ष में केवल एक ही बार अर्थात प्रायश्चित्त के दिन जाने की अनुमति थी (लैव्य. 16:34; इब्रा. 9:7)। उस दिन के बारे में याजकों को

निम्न निर्देश दिए गए थे:

> और जो वेदी यहोवा के सम्मुख है उस पर के जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान को लेकर, और अपनी दोनों मुट्ठियों को कूटे हुए सुगन्धित धूप से भरकर, बीचवाले परदे के भीतर ले आकर, उस धूप को यहोवा के सम्मुख आग में डाले, जिससे धूप का धुआँ साक्षीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर छा जाए, नहीं तो वह मर जाएगा (लैव्य. 16:12, 13)।

इस अनुच्छेद के अनुसार, धूप परदे के भीतर ही जलाया जाना चाहिए था (महापवित्र स्थान पर) - परंतु इसे वेदी पर नहीं बल्कि "धूपदान" में ही जलाया जाना चाहिए था।[2]

इब्रानियों 9:3, 4 यह संकेत करता है कि "सोने की धूप जलाने की वेदी" और "वाचा का संदूक" दूसरे परदे के पीछे, महा पवित्र स्थान पर रखा गया था। कुछ यहूदी लेख से ऐसा प्रतीत होता है कि वे भी धूप जलाने की वेदी को महा पवित्र स्थान में निर्धारित करते हैं। उदाहरण के लिए कुछ अपोक्रिफल साहित्य (2 बारूक 6:7; 2 मक्काबीज 2:5) से यह ज्ञात होता है कि यह वेदी महा पवित्र स्थान पर रखा गया था। फिर भी, यदि 2 बारूक का अनुच्छेद इस ओर संकेत करता है कि धूप जलाने की वेदी महा पवित्र स्थान में था, तो यह भी बताता है कि अधिकांश पवित्र स्थान में "परदा, पवित्र एपोद, प्रायश्चित्त का ढकना, दो पटिया और याजकों का पवित्र वस्त्र" पाया जाता था। क्योंकि परदा, एपोद, और याजकों का वस्त्र, महा पवित्र स्थान में नहीं पाया जाता था, तो इससे यह संभावना जताई जाती है कि धूप जलाने की वेदी भी वहाँ नहीं पाई जाती थी। इसके साथ ही, चूँकि परदा महा पवित्र स्थान को पवित्र स्थान से अलग करता था तो 2 बारूक के लेखक का यह तात्पर्य नहीं था कि संभवतः जिन वस्तुओं का उसने वर्णन किया है वह महा पवित्र स्थान में हो, परंतु ऐसा प्रतीत होता है वे वहाँ पर थे। न ही 2 मक्काबीज का अनुच्छेद वास्तव में यह कहता है कि धूप जलाने की वेदी महा पवित्र स्थान में था।

पुराना नियम के प्रमाण से ऐसा लगता है कि धूप जलाने की वेदी परदे के निकट किंतु पवित्र स्थान में ही रखा गया था। इब्रानियों की अनुच्छेद को ऐसा समझा जा सकता है कि "धूप जलाने की वेदी" महा पवित्र स्थान के निकट रखा गया था। इस विचार का समर्थन इसलिए किया जा सकता है क्योंकि यह कहता है कि "महा पवित्र स्थान" में "धूप जलाने की सोने की वेदी थी" और यह विशेष रूप से यह नहीं कहता है कि धूप जलाने की वेदी मिलापवाले तम्बू के उस भाग में रखा गया था।[3]

आयतें 7-9. यह पाठ यह बताता है कि वेदी का प्रयोग कैसे किया जाना चाहिए। हर सुबह और शाम, एक याजक को वहाँ पर **सुगंधित मसाला जलाना था**। इस निर्देश में दो नकारात्मक बात निहित है। पहला, याजक को उस वेदी में कोई **अन्य प्रकार का धूप** नहीं जलाना था। जॉन आई. डरहम ने इस अनुच्छेद को "घृणित धूप" करके अनुवाद इस प्रकार किया है और उसके पश्चात वह निम्न व्याख्या प्रस्तुत करता है: "'अन्य प्रकार का धूप,' अर्थात् साधारण उपयोग के लिए बनाया

गया धूप।"[4] दूसरे अनुवादों में "अनाधिकृत धूप" (NJB; NEB), "अपवित्र धूप" (NRSV), "अन्य धूप" (NIV), और "कलुषित धूप" (NAB) अनुवाद किया गया है। उनको उसमें वही धूप जलाना था जो उस कार्य के लिए ही बनाया गया था (30:34-38)। दूसरा, इस वेदी को **होमबलि, अन्नबलि या अर्घ** के लिए नहीं प्रयोग करना था; प्रांगण में होमबलि के लिए वेदी था।

आयत 10. वार्षिक प्रायश्चित्त के दिन में धूप जलाने की वेदी का प्रयोग किया जाना चाहिए था; उस दिन, महायाजक **प्रायश्चित्त के पापबलि के लहू से इस पर प्रायश्चित्त किया करता था** (देखें लैव्य. 23:27)। इसके उपयोग के कारण, **यह यहोवा के लिए** महापवित्र था।

धूप का सुगन्ध, पवित्र स्थान को विशिष्ट सुगन्ध से भर देता होगा, एक आनंदमय सुगन्ध जो महापवित्र स्थान तक भी जाता होगा। इसलिए, धूप जलाने की वेदी का संबंध महापवित्र स्थान से रहा होगा, जहाँ यहोवा अपने लोगों से परदे के पीछे मिलता था (30:6)। इसकी पवित्रता का समझौता "अन्य धूप" जलाकर नहीं किया जा सकता था (लैव्य. 10:1-3)। धूप जलाने से उत्पन्न धूएँ से बादल उत्पन्न होता था जिसका दोहरा प्रभाव, परमेश्वर की उपस्थिति और जब महायाजक महापवित्र स्थान में प्रवेश करता था तो यह उसकी सुरक्षा का प्रतीक होता था (लैव्य. 16:13)। मसीही काल से यदि इसको संबंधित किया जाए तो यह अभ्यास प्रार्थना को संबोधित करता है। प्रकाशितवाक्य 8:3, 4 में धूप, "संतों की प्रार्थना" से संबंधित है।

प्राणों के प्रायश्चित्त का रुपया (30:11-16)

[11]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [12]"जब तू इस्राएलियों की गिनती लेने लगे, तब गिनने के समय जिनकी गिनती हुई हो वे अपने अपने प्राणों के लिये यहोवा को प्रायश्चित्त दें, जिससे जब तू उनकी गिनती कर रहा हो उस समय कोई विपत्ति उन पर न आ पड़े। [13]जितने लोग गिने जाएँ वे पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा दें (यह शेकेल बीस गेरा का होता है), यहोवा की भेंट आधा शेकेल हो। [14]बीस वर्ष के या उससे अधिक अवस्था के जितने गिने जाएँ उनमें से एक एक जन यहोवा को भेंट दे। [15]जब तुम्हारे प्राणों के प्रायश्चित्त के निमित्त यहोवा की भेंट अर्पित की जाए, तब न तो धनी लोग आधे शेकेल से अधिक दें; और न दरिद्र लोग उससे कम दें। [16]और तू इस्राएलियों से प्रायश्चित्त का रूपया लेकर मिलापवाले तम्बू के काम में लगाना; जिससे वह यहोवा के सम्मुख इस्राएलियों के स्मरणार्थ चिह्न ठहरे, और उनके प्राणों का प्रायश्चित्त भी हो।"

ग्यारहवीं आयत से सोलहवीं आयत तक दान देने के पाँच कारण सूचीबद्ध किए गए हैं। (1) यह हरेक व्यक्ति द्वारा अपने "प्रायश्चित्त" (כֹּפֶר, *कोपर)* के लिए दिया जाना चाहिए था (30:12)। डरहम ने इसका अनुवाद "प्रायश्चित्त रूपया" किया है और उसमें उसने यह टिप्पणी जोड़ा: "जीवन का दाम, प्रायश्चित्त,

प्रायश्चित्त मूल्य।"[5] वाल्टर सी. कैसर, जूनियर, ने कहा कि "प्रायश्चित्त" का अर्थ "छुड़ाना या मूल्य देकर छुड़ाना" है।[6] (2) यह इसलिए दिया गया ताकि जब इस्राएलियों की गिनती की जाए तो उनके बीच "महामारी न पाई जाए" (30:12)। (3) यह इस्राएलियों द्वारा स्वयं "प्रायश्चित्त हेतु चुकाया जाने वाला" मूल्य है और इसलिए यह "प्रायश्चित्त रूपया" भी कहलाता है (30:15, 16)। (4) यह "मिलापवाले तम्बू की सेवा के लिए" दिया जाता था (30:16)। (5) यह "इस्राएलियों के लिए यहोवा के सम्मुख स्मरणार्थ" ठहरेगा (30:16)।

इन विचारों का सारांश इस अपेक्षित सहर्षदान जमा करने के दो कारणों और दो संभावित परिणामों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। इस्राएलियों को अपने पापों के लिए "प्रायश्चित्त करना" था या फिर आधा शेकेल चुकाकर अपने आपको "छुड़ाना" था। इस सहर्षदान से "मिलापवाले तम्बू की सेवा" की सहायता करना भी था। यदि वे इसको चुकाने में असफल रहते, तो उन पर महामारी आ पड़ती क्योंकि वे आज्ञाकारी नहीं रहे और उन्होंने अपने पापों से छुटकारा प्राप्त नहीं किया। यदि जैसे उन को बताया गया है उसके अनुसार चुकाते तो यहोवा उनको स्मरण करता और वे आशीष प्राप्त करते।

आयतें 11, 12. तम्बू के लिए क्या बनाया जाना चाहिए से लेकर उसको धन की आपूर्ति कैसे होगी को लेकर परमेश्वर का निर्देश 30:11-16 में फिर बदलता है।

यहोवा ने मूसा को बताया कि **छुड़ौती** या कर मिलापवाले तम्बू को धन की आपूर्ति करेगा, जिसका गण्य लोगों के **गिनती** के अनुसार होगी। इस्राएलियों की गिनती कब की गई, जिसकी सहर्षदान का वर्णन 38:26 में पाया जाता है? जो धन दिया गया वह बीस वर्ष या उससे ऊपर के उम्र के पुरुषों की गिनती से ठीक बैठती है जो उस गिनती के अनुसार थे जिसका वर्णन गिनती 1:45, 46 में 603,550 पुरुषों के बराबर है। यद्यपि, गिनती 1:1 स्पष्ट करता है यहोवा ने उन्हें गिनती करने का आदेश "इस्राएलियों के मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहिले दिन को" दिया था। यह मिलापवाले तम्बू के बनाए जाने और उसको खड़ा किए जाने के बाद, "दूसरे वर्ष के पहिले महीने के पहिले दिन" को हुआ था (40:17)। लोगों की गिनती के परिणामस्वरूप मिले चाँदी का प्रयोग मिलापवाले तम्बू बनाने में कैसे हो सकता था, यदि यह गिनती मिलापवाले तम्बू के बनाए जाने के बाद हुई हो?

इसका सर्वोत्तम उत्तर यह है कि गिनती 1 में वर्णित गिनती से पहले एक गिनती ली गई होगी। बाद की यह गिनती किसी दूसरे उद्देश्य के लिए की गई होगी: यह जानने के लिए कि इस्राएलियों की सेना में युद्ध के लिए कितने पुरुष उपलब्ध हैं (गिनती 1:2, 3)। यदि लोगों की दो गिनती की गई हो और उनकी गिनती वही पाई गई हो तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं चाहिए।

आयतें 13, 14. जबकि 30:11-16 में परमेश्वर ने जो विधि अपनाया वह कर है, इसे **यहोवा को भेंट** देना भी कहते हैं। यह कर जो **बीस वर्ष या उससे अधिक अवस्था के** पुरुषों पर लगाया गया था, वह **पवित्रस्थान के शेकेल के** लिये **आधा**

शेकेल था। एक शेकेल भार मापने का माप था। "आधा शेकेल" बहुमूल्य धातु, संभवतः चाँदी, का माप होता था। ओविद आर. सेलर्स के अनुसार आधा शेकेल 5.7 ग्राम या 0.2 ओंस के बराबर होता था।[7] "पवित्रस्थान के शेकेल" के माप का अर्थ स्पष्ट नहीं है; इस अनुच्छेद से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पवित्रस्थान में कर लेने के लिए प्रयोग किया जाने वाला शेकेल, दूसरे परिस्थितियों में प्रयोग किया जाने वाला शेकेल से भिन्न था। (इसकी अभिव्यक्ति 30:24; 38:25, 26 में भी प्रयोग किया गया है।)

आयत 15. यह अनुच्छेद यहोवा के सामने सभी बराबर हैं और इसकी पारदर्शिता पर जोर देता है: **न तो धनी लोग आधे शेकेल से अधिक दें; और न दरिद्र लोग उससे कम दें।**[8] यदि कोई इस बात पर आपत्ति जताये कि चूँकि धनी इसको आसानी से चुका सकते हैं, तो धनी और दरिद्रों का एक समान देना ठीक नहीं है, तो इसका उत्तर यह होना चाहिए कि ठहराई गई रकम इतनी छोटी है कि दरिद्र भी इसे आसानी से चुका सकते हैं।

आयत 16. कर **इस्राएलियों** के **प्रायश्चित्त** के बदले दिया जाना चाहिए।[9] **प्रायश्चित्त करना** (כִּפֶּר, *किप्पर)* पाप "ढाकने" के बारे में सुझाव देता है। फिर भी, इस बात की रोशनी में प्रायश्चित्त, होम बलि के मेज पर दिया जाना चाहिए (29:36), इस शब्द का विस्तृत अर्थ हो सकता है। इसका अर्थ "शुद्ध करना" या "समर्पण करना" भी हो सकता है। यह परिभाषा इस संदर्भ में ठीक बैठता है। जिस तरह याजकों को यहोवा की सेवा करने के लिए अपने आपको शुद्ध करना (अध्याय 29), और वेदी को यहोवा को समर्पण करना था, उसी तरह सभी पुरुषों को विधिवत शुद्ध करके उन्हें यहोवा को समर्पण करना था।

सोलहवीं आयत यह भी कहता है कि कर मिलापवाले तम्बू की **सेवा के लिए** एकत्रित किया जाना चाहिए था। क्या यह दान मिलापवाले तम्बू के निर्माण के लिए था या फिर उसकी रख-रखाव के लिए था? सोलहवीं आयत की वाक्यांश से ऐसा प्रतीत होता है कि यह कर मिलापवाले तम्बू की सेवा के लिए लगातार (संभवतः वार्षिक अनुदान के रूप में) चुकाया जाना चाहिए था। उदाहरण के लिए, प्रति वर्ष (29:38, 39) बलि करने के लिए सात सौ मेम्नों की पूर्ति करना आवश्यक था। वास्तव में इस प्रकार का कर देने का प्रमाण पाया जाता है। आर. ऐलेन कोल ने लिखा, "कालांतर में, 'आधा शेकेल,' वार्षिक मंदिर का कर निर्धारित कर दिया गया था (मत्ती 17:24)। बंधुआई उत्तरार्द्ध काल में इसका संकलन के लिए नहेम्याह 10:32 देखें।"[10] किंतु, 38 अध्याय में इस मांग की पूर्ति यह संकेत देती है कि इस माध्यम से संकलित धन का प्रयोग मिलापवाले तम्बू के निर्माण में लगाया गया था। इसलिए, कोई भी इस बात का निष्कर्ष निकाल सकता है कि जो कर लगाया गया था उसको वर्ष में एक ही बार में चुकाया जाना चाहिए था।[11] संभवतः इस समस्या का सर्वोत्तम समाधान यह है कि जैसे 30:16 बताता है कि कर निरंतर लिया जाना चाहिए था, लेकिन प्रथम कर मिलापवाले तम्बू के निर्माण के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए था। क्योंकि जब तक मिलापवाला तम्बू नहीं बनेगा तब तक उसके सेवा में उपयोग होने वाला धन की आवश्यकता नहीं होगी।

पीतल की हौदी (30:17-21)

[17]यहोवा ने मूसा से कहा, [18]"धोने के लिये पीतल की एक हौदी, और उसका पाया भी पीतल का बनाना। उसे मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच में रखकर उसमें जल भर देना; [19]और उसमें हारून और उसके पुत्र अपने अपने हाथ पाँव धोया करें। [20]जब जब वे मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करें तब तब वे हाथ पाँव जल से धोएँ, नहीं तो मर जाएँगे; और जब जब वे वेदी के पास सेवा टहल करने, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य जलाने को आएँ तब तब वे हाथ पाँव धोएँ, न हो कि मर जाएँ। [21]यह हारून और उसके पीढ़ी पीढ़ी के वंश के लिये सदा की विधि ठहरे।"

आयतें 17, 18. धूप जलाने की वेदी बनाने के समान ही (30:1-10), **हौदी** बनाने का निर्देश भी अटपटा सा जान पड़ता है। हौदी मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच में रखा गया था; इस आंगन की अन्य वस्तु होम बलि की वेदी, जिसका वर्णन 27वें अध्याय में आंगन की अहाता के साथ किया गया है, में पाया जाता है। इसका संभावित विश्लेषण यह है कि धूप जलाने की वेदी और हौदी बनाने के संबंध में निर्देश तब तक नहीं दिया गया था जब तक कि याजकों के वस्त्र और उनका शुद्धिकरण के निर्देश नहीं जारी किया गया था (अध्याय 28; 29)। धूप जलाने की वेदी और हौदी का याजकों के सेवा से नजदीकी संबंध है। याजक की भूमिका वेदी और हौदी की विश्लेषण पर टिका हुआ है (30:7, 8, 19-21)।

जैसे धूप जलाने की वेदी को **पीतल** से बनाया जाना था वैसे ही हौदी भी पीतल से बनाया जाना था। इसको मिलापवाले तम्बू और **वेदी के बीच** में और मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वारा पर रखा जाना था। इसके आकार के बारे में कोई सूचना नहीं दी गई है।

आयतें 19-21. इस हौदी को पानी से भरना था और उसका उपयोग धार्मिक संस्कार में किया जाना था (देखें 29:4)। जब भी याजक मिलापवाले तम्बू में **प्रवेश** करता था या फिर **वेदी** पर **होमबलि चढ़ाता** था, उसे अपने **हाथों** एवं **पांवों** को **धोना** था। जब वह अपने आपको इस तरह शुद्ध कर लेता था तभी वह सुरक्षित पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था। अपने आपको पानी से धोकर शुद्ध किए बिना यदि वह पवित्र स्थान में प्रवेश करता तो परमेश्वर उसको मार डालता। मृत्युदण्ड बड़ा कठोर सा जान पड़ता है, लेकिन यह परमेश्वर, और मिलापवाले तम्बू, जो परमेश्वर का निवास स्थान है, की पवित्रता पर जोर देता है। यह सम्पूर्ण आज्ञाकारिता पर भी जोर देता है। पानी से धोने की महत्वत्ता यह है कि यह आज्ञा याजकों के लिए एक **अविरल विधान** है।

हौदी में धोने की तुलना हम मसीही युग की बपतिस्मा से कर सकते हैं। जेम्स बर्टन कॉफमैन ने इस प्रकार पानी से धोने को "मसीही बपतिस्मा का पूर्वानुमान" कहा है (तीतुस 3:5; इफि. 5:26)."[12] जो अब, पहले जैसे, परमेश्वर के पवित्र स्थान में प्रवेश करना चाहते हैं, वे सबसे पहले अपने आपको पानी से धोना (डुबोना) है (प्रेरितों. 2:38; 22:16; इफि. 5:26; इब्रा. 10:22)।

अभिषेक का तेल (30:22-33)

22फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 23"तू उत्तम से उत्तम सुगन्धद्रव्य ले, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पाँच सौ शेकेल, अपने आप निकला हुआ गन्धरस, और उसका आधा, अर्थात् ढाई सौ शेकेल सुगन्धित दालचीनी, और ढाई सौ शेकेल सुगन्धित अगर, 24और पाँच सौ शेकेल तज, और एक हीन जैतून का तेल लेकर 25उनसे अभिषेक का पवित्र तेल, अर्थात् गन्धी की रीति से तैयार किया हुआ सुगन्धित तेल बनवाना; यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे। 26और उससे मिलापवाले तम्बू का, और साक्षीपत्र के सन्दूक का, 27और सारे सामान समेत मेज का, और सामान समेत दीवट का, और धूपवेदी का, 28और सारे सामान समेत होमवेदी का, और पाए समेत हौदी का अभिषेक करना, 29और उनको पवित्र करना, जिससे वे परमपवित्र ठहरें; और जो कुछ उनसे छू जाएगा वह पवित्र हो जाएगा। 30फिर हारून का उसके पुत्रों के साथ अभिषेक करना, और इस प्रकार उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने के लिये पवित्र करना। 31और इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना, 'यह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल होगा। 32यह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए, और मिलावट में उसके समान और कुछ न बनाना; यह पवित्र है, यह तुम्हारे लिये भी पवित्र होगा। 33जो कोई इसके समान कुछ बनाए, या जो कोई इसमें से कुछ पराए कुलवाले पर लगाए, वह अपने लोगों में से नष्ट किया जाए'।"

मिलापवाले तम्बू और याजकों को अभिषेक करने के लिए तेल बनाने और अभिषेक करने की विधि का निर्देशन दिया गया है। निर्गमन 40:9-16 में अभिषेक की तेल बनाने की विधि दोहराई गई है और वह यह भी बताता है कि मूसा ने उन निर्देशों का पालन किया। इस अध्याय के अन्य निर्देशों के समान, ये याजकों के कार्य से जुड़े हुए हैं।

आयतें 22-24. इस तेल को बनाने के लिए **उत्तम सुगंधद्रव्य - गंधरस, सुगन्धित दालचीनी, सुगन्धित अगर, तज और जैतून का तेल** की आवश्यकता थी। कुल मिलाकर, मसाले की जो मात्रा यहाँ बताई गई है वह लगभग "सोलह पौंड दालचीनी और मसाले और एक गैलन जैतून का तेल" था, यह एक ऐसा औसत मसाला बना जिसको पीटर ऐन्स ने "एक महंगी एवं अतिव्यवयी नुसखा" कहा।[13] कोल ने कहा, "जो मसाले प्रयोग किए गए हैं वे दुर्लभ, महंगे और खुशबूदार हैं और व्यापार के माध्यम से दूर देश जैसे भारत से लाए गए होंगे: क्योंकि अरब न केवल मसाला उत्पादक देश था, परंतु मसालों का एक बड़ा व्यापार केन्द्र भी था।"[14]

आयत 25. अभिषेक करने का तेल समाप्त होने पर इसके बनाने के संबंध में सावधानीपूर्वक दिए गए निर्देशों का पालन करने से और अधिक तेल बनाने की संभावनाएं बनी रहती है। जो निर्देश दिया गया था वह तेल बनाने का नुसखा जारी रखने के लिए था, इस संबंध में अन्य लोगों को इस नुसखा का प्रयोग कर किसी अन्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए तेल बनाने लिए कड़ी चेतावनी दी गई थी

(30:32, 33)। यह **पवित्र** होना चाहिए था, जो परमेश्वर के विशेष उद्देश्य के लिए अलग किया गया था।

आयतें 26-29. यह अनुच्छेद **अभिषेक का तेल** के बारे में स्पष्टीकरण करता है। इसका प्रयोग मिलापवाले तम्बू के साथ-साथ उसमें सेवा करने वाले याजकों और फर्नीचर का अभिषेक करने के लिए किया जाता था। इस तेल का प्रयोग उनको **अति पवित्र** बनाने के लिए उनके पवित्रीकरण के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए था। याजक इसलिए "अति पवित्र" थे क्योंकि वे विशेष रूप से मिलापवाले तम्बू में सेवा करने के लिए अलग किए गए थे। अभिषेक का तेल का यह विशिष्ट उद्देश्य था (30:31-33)।

आयतें 30-33. यदि कोई **अभिषेक का तेल** का प्रयोग किसी अन्य उद्देश्य या इसके समान बनाकर उसे व्यक्तिगत उद्देश्य के लिए प्रयोग करे, तो वह व्यक्ति **अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए,** मार डाला जाए (देखें 12:15, 19; 31:14)। क्यों यहोवा किसी को इस तेल का दुरूपयोग करने के लिए दण्ड दे? ऐन्स इस प्रश्न का उचित उत्तर देते हैं:

> परमेश्वर के निर्देशों को पूरी तरह से पालन न करने का दण्ड मृत्यु है। कोई भी इस प्रकार का प्रश्न पूछने की परीक्षा में गिर सकता है, "अभिषेक का तेल और सुगन्ध द्रव्य में ऐसी खास बात क्या है?" यह बाइबल आधारित प्रश्न नहीं है। इसका औचित्य यह है कि इस्राएलियों के लिए इस तेल और सुगन्ध द्रव्य ऐसे ही आदर के योग्य हैं।[15]

अभिषेक का तेल और सुगन्ध द्रव्य आदर के योग्य थे क्योंकि परमेश्वर ने उसके बारे में ऐसा ही कहा था।

सुगन्धद्रव्य (30:34-38)

34फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "बोल, नखी और कुन्दरू, ये सुगन्धद्रव्य शुद्ध लोबान समेत ले लेना, ये सब एक तौल के हों, 35और इनका धूप अर्थात् नमक मिलाकर गन्धी की रीति के अनुसार चोखा और पवित्र सुगन्धद्रव्य बनवाना। 36फिर उसमें से कुछ पीसकर बारीक कर डालना, तब उसमें से कुछ मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहाँ पर मैं तुझ से मिला करूँगा, रखना; वह तुम्हारे लिये परमपवित्र होगा। 37जो धूप तू बनवाएगा, मिलावट में उसके समान तुम लोग अपने लिये और कुछ न बनवाना; वह तुम्हारे आगे यहोवा के लिये पवित्र होगा। 38जो कोई सूँघने के लिये उसके समान कुछ बनाए वह अपने लोगों में से नष्ट किया जाए।"

आयतें 34, 35. मिलापवाले तम्बू और उसका फर्नीचर बनाने के साथ-साथ याजकों के वस्त्र, उनका पवित्रीकरण और उनके कार्यों पर निर्देशन के साथ ही यह अध्याय जलाने के लिए **सुगन्धद्रव्य** बनाने के साथ समाप्त होता है। इसको बनाने

का निर्देश इससे पहले अभिषेक के तेल के संबंध में बताए गए निर्देश के समान ही है। (1) विस्तृत नुसखा दिया गया है (30:34-36)। (2) आवश्यक मसाले दुर्लभ व महंगे थे।[16] सुगन्धद्रव्य बनाने में प्रयुक्त विशिष्ट **मसाले** की पहचान निश्चितता से नहीं की जा सकती है। (3) सुगन्धद्रव्य को **पवित्र** मानना था (30:35, 36)। (4) किसी को भी व्यक्तिगत प्रयोग के लिए ऐसे सुगन्धद्रव्य बनाने की अनुमति नहीं थी (30:37)। (5) यदि किसी ने भी इस नियम का उल्लंघन किया तो वह "अपने लोगों बीच नाश किया जाएगा" (30:38), या मार दिया जाएगा।

आयत 36. पाठ यह बताता है कि मसालों को **पीसकर बुकनी कर डालना था** और उसे **मिलापवाले तम्बू के साक्षीपत्र के आगे रखना था** जहाँ **परमेश्वर** अपने लोगों से मिला करेगा। मसालों को पीसकर रखने का तात्पर्य यह था कि मिश्रण को "दानेदार रूप" में तब तक रखना था जब तक कि वह प्रयोग के लिए तैयार ने हो जाए।[17] इस दानेदार मिश्रण को "मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे रखने" का सामान्य अर्थ यह है कि इस मिश्रण को धूप जलाने की वेदी पर प्रयोग किया जाना चाहिए था। परदे के निकट इसको रखे जाने और इसके उपयोग के कारण, धूप जलाने की वेदी और इसकी सामग्री का संबंध अति पवित्र स्थान से था।

आयतें 37, 38. सुगन्धद्रव्य व्यक्तिगत प्रयोग के लिए नहीं था। यह सामग्री **यहोवा के लिए पवित्र होगा**।

अनुप्रयोग

याजक पद का विशेषाधिकार एवं संकट (अध्याय 29; 30)

निर्गमन 28-30, याजकों एवं उनकी सेवाओं के बारे में वर्णन करता है। उनतीसवें अध्याय याजकों का पवित्रीकरण के बारे में वर्णन करते हुए इसका अंतिम भाग, उनकी सेवाओं के बारे में विश्लेषण करता है जो तीसवें अध्याय तक जारी रहता है। यह अनुच्छेद पुरानी व्यवस्था के अंतर्गत याजक पद पर सेवा करते हुए उनके विशेषाधिकार एवं संकट के बारे में सुझाव प्रस्तुत करता है। क्योंकि आज हम नई व्यवस्था के अंतर्गत हैं तो इससे हम क्या समानता सीख सकते हैं?

याजक होने का विशेषाधिकार। निर्गमन 29 और 30 के अनुसार याजकों को छह बातें करने का विशेषाधिकार प्राप्त था, जो अन्य इस्राएली नहीं कर सकते थे। (1) वे होमबलि की वेदी पर बलि किया करते थे (29:38-46)। दैनिक रूप से दो बार मेम्ने की बलि दी जाती थी। (2) वे दिन में दो बार धूप जलाने की वेदी पर धूप जलाते थे (30:1-19)। (3) वे लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त करते थे (30:10)। प्रायश्चित्त के दिन धूप जलाने की वेदी का प्रयोग होता था। (4) लोगों से प्राप्त भेंट को वे ग्रहण करते और उसे बांटते थे (30:12-16)। यह पाठ लोगों की गिनती व कर संबंधी बातों में याजकों की भूमिका स्पष्ट नहीं करता है, परंतु हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि याजकों ने कर जमा करने और उसका उपयोग करने में सक्रिय भूमिका निभाई होगी। (5) वे हौदी के पानी से अपने आपको धोते थे (30:17-21)। इस संदर्भ में हौदी बनाने का निर्देशन इसलिए दिया गया था क्योंकि

हौदी का याजकों की भूमिका व उनके कार्यों से निकट संबंध था। (6) वे अभिषेक का तेल व सुगन्ध-द्रव्यों का भी प्रयोग करते थे (30:22-38)।

ये कार्य उनके विशेषाधिकार दर्शाते हैं। बलि चढ़ाना, धूप जलाना, पापों के लिए पश्चात करना, मिलापवाले तम्बू में सेवा करना, हौदी में धोना और तेल व सुगन्धद्रव्य प्रयोग करना उनके विशेषाधिकार क्षेत्र में था।

उसी तरह, आज हम जो मसीही लोग हैं याजकों की सेवा करते हैं (1 पतरस 2:5)। हम निरंतर यीशु के लहू से धोए जाते हैं। हम हियावपूर्वक परमेश्वर के सिंहासन के निकट आ सकते हैं, दूसरों के लिए मध्यस्थता कर सकते हैं, स्तुति की भेंट चढ़ा सकते हैं और कलीसिया का एक अंग होने के कारण आराधना में संलग्न हो सकते हैं (1 तीमु. 2:1; इब्रा. 4:16; 10:25; 12:38; 13:15; 1 यूहन्ना 1:7)। ये सब विशेषाधिकार हैं! हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए इन विशेषाधिकारों के लिए धन्यवादित रहना चाहिए। हमें इसका लाभ लेना चाहिए और इन्हें हल्के में नहीं लेना चाहिए या फिर ये हमारी दैनिक दिनचर्या की सामान्य गतिविधि नहीं होनी चाहिए।

याजक होने का संकट। याजक पद का विशेषाधिकार के साथ ही कुछ खतरे भी इससे जुड़े हुए हैं। परमेश्वर पवित्र है, इसलिए सभी बातें जो उससे जुड़ी हुई है, पवित्र हैं। सर्वांग पवित्र परमेश्वर के सम्मुख होना खतरा पैदा कर सकता है (33:3)। बिना अनुमति के पवित्र को देखना या छूना मृत्यु को आमंत्रित करने जैसा है (1 शमूएल 6:19; 2 शमूएल 6:6, 7)।

याजक के कार्य को इलेक्ट्रीशियन के कार्य से संबंधित किया जा सकता है। एक इलेक्ट्रीशियन ऊर्जा के एक बड़े स्रोत के साथ कार्य करता है। जब इलेक्ट्रीशियन उस ऊर्जा का सदुपयोग करता है तो वह दूसरे लोगों एवं स्वयं के लिए एक बड़ी आशीष का कारण ठहरती है। फिर भी, यदि इलेक्ट्रीशियन उस ऊर्जा का दुरुपयोग करता है या फिर उसको उचित तरीके से प्रयोग नहीं करता है - तो स्वयं व दूसरे लोगों के लिए इसका दुष्परिणाम हो सकता है। उसी तरह एक याजक एक महासामर्थ के साथ मध्यस्थता करता है। यदि वह इस सामर्थ का दुरुपयोग करता है तो वह स्वयं मारा जा सकता है और दूसरों की बड़ी दुर्दशा हो सकती है।

इस तथ्य पर निर्गमन 30 में बड़ा जोर दिया गया है। इस अध्याय का हरेक भाग इस बात पर जोर देता है कि यदि याजक दिया गया कार्य उचित रीति से नहीं करता है तो इसके लिए उसको दण्ड दिया जा सकता है। यह दण्ड चाहे बोला गया हो या फिर न बोला गया हो, मृत्युदण्ड है। यहोवा ने यह स्पष्ट कर दिया था कि लोगों की गिनती इसलिए ली जानी चाहिए ताकि लोगों के बीच में कोई "महामारी न" हो (30:12)। हौदी के संबंध में यह कहा गया था कि याजक अपने "हाथ पाँव धोएँ, न हो कि मर जाएँ" (30:21)। कोई भी यदि अभिषेक का तेल का दुरुपयोग करता है तो वह "अपने लोगों के बीच से नष्ट किया जाए" (30:33)। सुगन्ध-द्रव्यों के संबंध में पाठ यह बताता है, "जो कोई सूँघने के लिये उसके समान कुछ बनाए वह अपने लोगों में से नष्ट किया जाए" (30:38)। "अपने लोगों में से नष्ट किया जाना" का तात्पर्य मृत्युदण्ड प्राप्त करना है।

सबसे रोचक बात यह है कि इस अध्याय में केवल एक ही ऐसी आज्ञा है जिसके बदले में मृत्युदण्ड नहीं दिया सकता था, और वह है वेदी पर सुगन्धद्रव्य जलाने की आज्ञा का उल्लंघन। निर्गमन 30:9 कहता है, "उस वेदी पर तुम किसी अन्य प्रकार का धूप न जलाना।" यद्यपि, जब यहोवा ने नादाब और अबीहू को वेदी पर अन्य प्रकार के धूप जलाने के कारण घात किया तो इससे यह स्पष्ट हो गया कि उसके निर्देशों का ठीक से पालन नहीं करने से लोगों को दण्डित किया जा सकता है (लैव्य. 10:1, 2)।

मिलापवाले तम्बू में धार्मिक संस्कार ठीक से नहीं करने का परिणाम मृत्युदण्ड मिलना, थोड़ा कठोर सा जान पड़ता है। फिर भी, हमें यह स्मरण रखना होगा कि परमेश्वर मानवीय मानदंड से न्याय नहीं करता है और वह अपनी ही बुद्धि और इच्छा स्वीकार करता है। यदि उसका मानदंड यह कहता है कि उसके निर्देशों को न पालन करने का परिणाम मृत्युदण्ड है, तो यह ऐसा ही है। इसके साथ ही, हमें अपने आपको यह भी स्मरण दिलाना होगा कि विशेषाधिकार के साथ बड़ी जिम्मेदारियां भी जुड़ी हुई है। याजकों के लिए निर्गमन 30 में जो निर्देश दिए गए हैं, उससे वे जानते थे कि उनसे क्या अपेक्षा की गई है। इन अपेक्षाओं में खरा न उतरने का तात्पर्य उस परमेश्वर से बलवा करना है जिसने इन निर्देशों को जारी किया है। किसी भी सेना में, सेनानायक के निर्देश का उल्लंघन का अपराध मृत्युदंड के समान माना जाता है। तो यह वक्तव्य कितना सटीक बैठता है जब सेनानायक इस सृष्टि का सृष्टिकर्ता सर्वांग पवित्र परमेश्वर हो!

उपसंहार। हमारे लिए पाठ स्पष्ट है। हम यह सोच सकते हैं कि जब तक हम उसकी आराधना करते रहते हैं तो चाहे आराधना में उसके आज्ञा का ठीक से पालन करते हैं या नहीं, परमेश्वर को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। पुराना नियम इसका उदाहरण हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है। जो बात हमें छोटी दिखाई देती है वह परमेश्वर के सम्मुख छोटी नहीं हो सकती है। आराधना में "छोटी" बात परमेश्वर के सम्मुख "बड़ी" हो जाती है।

सुगन्धद्रव्य वाली वेदी से प्रार्थना के लिए पाठ (30:1-10)

सोने की वेदी और इसमें चढ़ाए जाने वाले सुगन्धद्रव्य की तुलना हमारे प्रार्थना से की जा सकती है (प्रका. 8:3, 4)। (1) सुगन्धद्रव्य केवल याजकों द्वारा ही चढ़ाई जाती थी और प्रार्थना, आज के विश्वासियों के याजक पद का विशेषाधिकार है। (2) वेदी और सुगन्धद्रव्य का महा पवित्र स्थान से नजदीकी संबंध है। जिस तरह धुआँ और सुगन्धद्रव्य से उठने वाली सुगन्ध महा पवित्र स्थान को भर देती थी, उसी तरह हमारी प्रार्थना भी परमेश्वर के उपस्थिति में जा पहुँचती है। (3) धूप जलाने का संबंध प्रायश्चित्त से था और मसीही लोग क्षमा दान के लिए प्रार्थना करते हैं। (4) धूप दैनिक रूप से सुबह और शाम जलाया जाता था। उसी तरह, मसीही लोगों को निरंतर प्रार्थना करते रहना चाहिए। (5) सुगन्ध-द्रव्यों की वेदी "महा पवित्र" था और सुगन्ध-द्रव्यों के संबंध में दिया गया निर्देश "अनवरत व्यवस्था" था। प्रार्थना "अति पवित्र" है - यह पवित्र विशेषाधिकार और जिम्मेदारी

है। यह भी "अनवरत व्यवस्था" है - यह मसीह के आने तक मसीहियों की आकांक्षा है। (6) वेदी और सुगन्ध-द्रव्यों का दुरुपयोग खतरनाक हो सकता था (लैव्य. 10:1-3), और मसीहियों को प्रार्थना के अधिकार का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

परमेश्वर के सम्मुख सब बराबर (30:15)

स्वतंत्र राष्ट्र की घोषणा है कि "सभी लोग एक समान बनाए गए हैं।" मूसा के व्यवस्था के अधीन परमेश्वर के सम्मुख सभी लोग एक समान थे, और नई वाचा के अंतर्गत भी यही व्यवस्था है। जब परमेश्वर ने आधा शेकेल कर देने के लिए कहा तो उसने मूसा से कहा, "तब न तो धनी लोग आधे शेकेल से अधिक दें; और न दरिद्र लोग उससे कम दें।" कई मायनों में परमेश्वर आज भी धनी और निर्धन, जवान और बूढ़े, स्त्री और पुरुष से एक समान अपेक्षा करता है। जहाँ तक देने की बात है तो हरेक मसीही को अपनी समृद्धि के अनुसार देना चाहिए (1 कुरि. 16:1, 2)।

उसी तरह, सभी लोगों को मसीह का अनुयायी होने के लिए उसी सुसमाचार का अनुसरण करना होगा (गला. 3:26-28)। जो भी उद्धार प्राप्त करना चाहता है उसे सुसमाचार के संदेश पर विश्वास करना होगा: "... कि पवित्रशास्त्र के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा" (1 कुरि. 15:3, 4)। जब हम अपने पापों से पश्चाताप करते हैं और बपतिस्मा के द्वारा उनको धो देते हैं (प्रेरितों. 2:38), तो हम परमेश्वर के संतान और मसीह के संगी वारिस बन जाते हैं (यूहन्ना 1:12; रोमियों 8:17; 1 यूहन्ना 3:1)। परमेश्वर यहूदी और यूनानी, पुरुष और स्त्री, दास और स्वतंत्र में कोई भेद नहीं करता है: वे सभी जो उसको पुकारते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं, बचाए जाएंगे (रोमियों 10:12, 13; गला. 3:28)।

समाप्ति नोट्स

[1]अम्बरटो केसुटो, *ए कमेंट्री आन द बुक आफ एक्सोडस,* अनुवादक इस्राएल अब्राहम्स (यरूशलेमः मैगनस प्रेस, 1997), 391; आर. एलेन कोल, *एक्सोडसः एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, Ill.: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 205; नहूम एम. सारना, *एक्सोडस,* द जे पी एस तोराह कमेंट्री (न्यू यॉर्कः ज्यूविश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1991), 193; डब्ल्यु. एच. जिप्सन, *एक्सोडस,* अनुवादक एड वैन डर मास, बाइबल स्टूडेंट्स कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफेरेंस लाइब्रेरी, जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1982), 281; जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, खण्ड. 3 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1987), 399. [2]लुई गोल्डबर्ग, "लेवीटीकस," *एवांजेलिकल कमेंट्री आन द बाइबल,* सम्पादक वाल्टर ए. एल्वेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1989), 78. [3]इब्रानियों की पत्री के टीकाकार इस व्याख्या का समर्थन करते हैं, उनमें से कुछ की सूची नील आर. लाईटफूट, *जीजस क्राईस्ट टूडेः कमेंट्री आन द बुक आफ हिब्रूज* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1976), 179. धूप जलाने की वेदी के बारे में एफ. एफ. ब्रूस, *दि एपिस्टल टू द हिब्रूज,* द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1964), 184-87 में चर्चा किया गया है। [4]डरहम, 398-99. [5]उपरोक्त, 401. [6]वाल्टर सी. कैसर, जूनियर, "एक्सोडस," *द एक्स्पोसिटर्स बाइबल कमेन्ट्री* में, वॉल्यूम 2, *जेनेसिस-नंबर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 1990), 473.

[7]ओविद आर. सेलर्स, "वेट्स एण्ड मेजर्स," *इंटरप्रेटर्स डिक्शनरी आफ द बाइबल,* सम्पादक जॉर्ज आर्थर बटरिक (नैशविलः अबिंगदोन प्रेस, 1962), 4:832-33. [8]डरहम, 403. [9]इस "प्रायश्चित्त" के कारणों का विश्लेषण जिपसन, 282-83 में किया गया है। [10]कोल, 206.

[11]यह जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेंट्री आन एक्सोडस, द सेकेंड बुक आफ मोजेज* (एबिलीन, टेक्सासः एसीयू प्रेस, 1985), 423 का सारांश है। [12]उपरोक्त, 425-26. [13]पीटर ऐन्स, *एक्सोडस,* द NIV अप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः जॉडरवैन, 2000), 541. [14]कोल, 207. [15]ऐन्स, 541. [16]डरहम, 408. [17]उपरोक्त।